



e-ISSN:2582 - 7219



# INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 5, Issue 2, February 2022



INTERNATIONAL  
STANDARD  
SERIAL  
NUMBER  
INDIA

Impact Factor: 5.928



9710 583 466



9710 583 466



ijmrset@gmail.com



www.ijmrset.com



## राजस्थान के हाड़ौती प्रदेश में कृषि भूमि उपयोग में बदलावों का भौगोलिक अध्ययन—(1991–2015)

हरीश महावर – शोधार्थी, भूगोल विभाग, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा

डॉ. बाबूलाल शर्मा – पूर्व प्राचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा

### सारांश :

कृषि प्राचीनकाल से ही मानव विकास का आधार स्तम्भ रही है। वस्तुतः कृषि कार्य मनुष्य द्वारा किया जाने वाला प्रथम उद्देश्यपूर्ण कार्य है। मनुष्य ने अपनी विकास यात्रा के दौरान कृषि स्वरूप में निरंतर परिवर्तन किया है, फलस्वरूप कृषि का परम्परागत स्वरूप जो की पशुओं एवं कुछ परम्परागत साधनों के इर्द गिर्द ही संचालित होता था, उसमें व्यापक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। अर्थात् परम्परागत कृषि जो प्रारम्भिक काल में मनुष्य केवल अपनी आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु करता था, वर्तमान समय में उस कृषि का स्वरूप पूर्णतः वाणिज्यिक हो गया है। यही कारण है की आज भारत देश की अर्थव्यवस्था का आधार स्तम्भ कृषि ही है। बढ़ती जनसँख्या एवं उसी के अनुरूप बढ़ती खाद्यानों की मांग के फलस्वरूप मनुष्य ने कृषि भूमि का अधिकाधिक उपयोग करना प्रारम्भ किया जिस कारण कृषि भूमि उपयोग में व्यापक परिवर्तन हुए हैं, आज कम समय में कृषक अधिक से अधिक फसल उपज लेने की लालसा में फसल गुणवत्ता को महत्व नहीं दे रहे हैं एवं इसी कारण विभिन्न रसायनों, कीटनाशकों तथा मशीनों का उपयोग कृषि क्षेत्र में बढ़ा है।

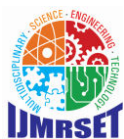
कृषि क्षेत्र में आये इन परिवर्तनों का स्पष्ट प्रभाव राजस्थान के हाड़ौती प्रदेश में भी देखा जा सकता है। राज्य के इस भौतिक प्रदेश में कृषि स्वरूप एवं कृषि भूमि उपयोग प्रारूप में व्यापक स्तर परिवर्तन देखने को मिलते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में राजस्थान के हाड़ौती प्रदेश में कृषि स्वरूप एवं कृषि भूमि उपयोग में आये इन्ही परिवर्तनों का भौगोलिक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

**मूल बिंदु :** भूमि उपयोग, कृषि, प्रविधिकीय परिवर्तन



## परिचय:

कृषि एक ऐसा उद्यम है जिसके लिए अपेक्षाकृत अधिक भूमि की आवश्यकता होती है। कृषि का इतिहास मानव सभ्यता की भांति ही अति प्राचीन है। मनुष्य ने आखेट क्रिया के पश्चात् पशुपालन एवं कृषि कार्य का श्रीगणेश साथ साथ ही किया था परंतु मनुष्य की निरंतर बढ़ती आवश्यकता ने समयानुसार कृषि कार्यों को प्रधान बना दिया तथा शने: शने: कृषि मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गयी। बढ़ती जनसंख्या तथा बढ़ते तकनीकी विकास के कारण मनुष्य ने कृषि के स्वरूप एवं आयामों में व्यापक परिवर्तन किए हैं, जिसे वर्तमान समय में कृषि आधुनिकीकरण के रूप में देखा जा सकता है। कृषि आधुनिकीकरण का प्रारम्भ हरित क्रांति से होता है, वस्तुतः यही वो समय था जहां से कृषि एवं कृषि भूमि उपयोग में व्यापक क्षेत्रीय परिवर्तन दृष्टिगत हुये हरित क्रांति के कारण कृषि क्षेत्र में एक और जहां विभिन्न प्रकार के उर्वरकों एवं कीटनाशकों के उपयोग में उतरोत्तर वृद्धि हुई वहीं कृषि क्षेत्र में मशीनीकरण को भी बढ़ावा मिला। यद्यपी किसी भी क्षेत्र में कृषि के विकास पर उस क्षेत्र विशेष के भौतिक एवं सांस्कृतिक वातावरण का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है, परन्तु औद्योगिक मनुष्य ने तकनीकी विकास के कारण कुछ हद तक इन प्रभावों को नगण्य कर दिया है। वर्तमान समय में ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जहाँ विपरीत दशाओं में भी मनुष्य कृषि कार्य कर रहा है। कृषि क्षेत्र में बढ़ते आधुनिकीकरण के कुछ गुणात्मक प्रभाव भी देखें जा सकते हैं परंतु साथ ही इस आधुनिकीकरण के कारण कृषि क्षेत्र में भूमि उपयोग तथा मृदा से संबन्धित कुछ समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं जिनका समय रहते निवारण किया जाना अति आवश्यक है।



साहित्य पुनरावलोकन :

जे. टी. कॉपोक द्वारा 1964 में न्यूनतम वर्गों की पद्धति का उपयोग करते हुए 11 फसल क्षेत्रों (प्रथम क्रम के क्षेत्र) तथा 38 फसल संयोजन क्षेत्रों का निर्धारण किया है।

सिंह, बी.आर. (1996) ने अपनी पुस्तक "रिसर्च इन ज्योग्राफी, लेण्ड यूज चेन्जेज सस्टेबल" में भूमि के बदलते उपयोग एवं इसका कृषि पर प्रभाव तथा नियोजन से संबंधित विभिन्न लेखकों के लेखों का समावेश किया है।

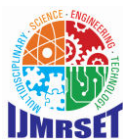
शर्मा, टी.सी. (1999) ने अपनी पुस्तक "टेक्नोलोजिकल चेन्ज इन इंडियन एग्रीकल्चर" में कृषि, भूमि उपयोग से संबंधित बदलती धरातलीय विषमताओं का अध्ययन किया है, साथ ही कृषि की गहनता, भूमि उपयोग, कृषि नियोजन पर विस्तृत प्रकाश डाला है।

रामा प्रसाद (2002) ने टोंक जिले में कृषि भूदृश्य का परिवर्तन भूमि उपयोग प्रारूप पर लेख लिखे तथा ग्रामीण परिवेश के समुचित नियोजन हेतु सुझाव प्रस्तुत किये।

निहारिका सोनकर, प्रमोद कुमार तिवारी, (2021) - जनपद प्रतापगढ़ के विकास खण्ड शिवगढ़ में भूमि उपयोग प्रतिरूप – इस शोधपत्र में लेखक द्वारा यह बताया गया है कि प्राकृतिक संसाधनों में भूमि अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्राथमिक संसाधन के रूप में है। तत्पश्चात अन्य संसाधनों का उद्भव एवं विकास हो पाया है।

प्रो. बी.बी. शर्मा, अक्षय शुक्ला (2011) ने "कृषि संसाधनों पर जनसंख्या दबाव के कारण पर्यावरण की समस्या" में उत्तर प्रदेश के रामपुर जिले के विशेष अध्ययन द्वारा क्षेत्र में निरन्तर बढ़ी हुई जनसंख्या के कृषि भूमि उत्पादनों पर पड़ने वाले दबाव का अध्ययन किया है।





## उद्देश्य :

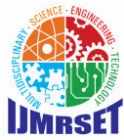
- हाड़ौती प्रदेश में कृषि के वर्तमान स्वरूप का विश्लेषण करना।
- हाड़ौती प्रदेश में कृषि भूमि उपयोग में आये परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
- हाड़ौती प्रदेश में भूमि उपयोग का वर्गीकरण प्रस्तुत करना।
- हाड़ौती प्रदेश में भूमि उपयोग में परिवर्तन के प्रमुख कारणों का वर्णन करना।
- हाड़ौती प्रदेश में कृषि भूमि प्रारूप का विश्लेषण करना।
- हाड़ौती प्रदेश में सिंचाई सुविधाओं के फलस्वरूप कृषि क्षेत्र में हुए परिवर्तनों का अध्ययन करना।

## आंकड़ों के स्रोत :

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर तैयार किया गया है। इस हेतु विभिन्न प्रकार के द्वितीयक आंकड़ों का संकलन बारां, बूंदी झालावाड़, एवं कोटा जिलों के जिला सांख्यिकीय कार्यालय से किया गया है, साथ ही हाड़ौती प्रदेश के अंतर्गत आने वाली इन जिलों की विभिन्न तहसीलों के तहसील कार्यालयों से भी आवश्यक आंकड़ों का संकलन किया गया है। विभिन्न प्रकार के नवीन आंकड़ों के लिए ऑनलाइन स्रोतों की सहायता भी ली गयी है।

## अध्ययन क्षेत्र :

हाड़ौती प्रदेश राजस्थान राज्य का एक महत्वपूर्ण औद्योगिक एवं कृषि प्रधान प्रदेश है। इसका अक्षांशीय विस्तार  $24^{\circ} 25'$  उत्तरी अक्षांश से  $25^{\circ} 21'$  उत्तरी अक्षांश तथा  $75^{\circ} 15'$  पूर्वी देशान्तरो से  $76^{\circ} 45'$  पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। इस क्षेत्र की पूर्व से पश्चिम लम्बाई 155 कि.मी. तथा उत्तर से दक्षिण चौड़ाई 180 कि.मी. है। हाड़ौती प्रदेश का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 14481.6 वर्ग किलोमीटर है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार इस प्रदेश की कुल जनसँख्या 3112057 थी। इस प्रदेश की सर्वाधिक जनसँख्या वाली तहसील कोटा जिले की लाडपुरा तहसील थी, जहां की कुल जनसँख्या 868213 थी वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार हाड़ौती प्रदेश में आबाद ग्रामों की संख्या 2256 थी तथा नगरों की संख्या 15 थी। यह प्रदेश पश्चिम में मेवाड़, उत्तर पश्चिम



में अजमेर, दक्षिण में मालवा और पूर्व में गिर्द क्षेत्र द्वारा सिमांकित हैं। दक्षिण पूर्वी राजस्थान का यह क्षेत्र पूर्व में मालवा पठार, पश्चिम में अरावली पर्वतमाला और मारवाड़ पठार, मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित है। इस प्रदेश की प्रमुख नदी चंबल है, जिसकी सहायक नदियाँ कालीसिंध, पार्वती, परवन और चापी नदी हैं। इस क्षेत्र में जलोढ़ मृदा पायी जाती है।

### भूमि उपयोग :

निम्न तालिका में हाड़ौती प्रदेश की विभिन्न तहसीलों में कृषि अयोग्य भूमि के आंकड़ों को दर्शाया गया है तालिका में हाड़ौती प्रदेश में वर्ष 1991 एवं वर्ष 2015 में कृषि अयोग्य भूमि के आंकड़ों का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है, कृषि अयोग्य भूमि के अंतर्गत कृषि कार्यों के अतिरिक्त काम में ली गयी भूमि तथा ऊसर भूमि को सम्मिलित किया गया है।

### भूमि जो कृषि के अतिरिक्त काम में ली गई :

हाड़ौती प्रदेश में वर्ष 1991 से वर्ष 2015 के मध्य कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों में उपयोग गयी भूमि के क्षेत्रफल में स्पष्ट परिवर्तन देखने को मिलता है। वर्ष 1991 में हाड़ौती प्रदेश में कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों में उपयोग में लायी गयी भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल लाडपुरा तहसील में पाया गया है। इस वर्ष इस तहसील में कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों में उपयोग में लायी गयी भूमि का कुल क्षेत्रफल 9375 हेक्टेयर पाया गया है जबकि वर्ष 2015 में इस प्रकार की भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल भी इसी तहसील में पाया गया है। तुलनात्मक आधार पर यह कहा जा सकता है की लाडपुरा तहसील में कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों में उपयोग में लायी गयी भूमि के क्षेत्रफल में वृद्धि हुई है। इसी प्रकार वर्ष 1991 में कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों में उपयोग में लायी गयी भूमि का सबसे कम क्षेत्रफल प्रदेश की बूंदी तहसील में पाया गया है। इस तहसील में इस प्रकार की भूमि का क्षेत्रफल केवल 547 हेक्टेयर पाया गया है जो की इस वर्ष सबसे कम था एवं वर्ष 2015 में भी कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों में उपयोग में लायी गयी भूमि का सबसे कम क्षेत्रफल वाली तहसील बूंदी ही है। हाड़ौती प्रदेश में वर्ष 1991 में लाडपुरा तहसील के बाद



कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों में उपयोग में लायी गयी भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल केशवराय पाटन तहसील में पाया गया है।

तालिका संख्या 01 : हाड़ौती प्रदेश में भूमि उपयोग—1991—2015  
(कृषि अयोग्य भूमि)

(हैक्टेयर)

क्र.सं.	तहसील का नाम	1991		2015	
		कृषि के अतिरिक्त काम में ली गई	ऊसर तथा कृषि अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त काम में ली गई	ऊसर तथा कृषि अयोग्य भूमि
1.	अटरू	3020	3985	4253	3357
2.	अंता	1754	3285	4541	3580
3.	बारां	1287	1758	3301	2636
4.	बून्दी	547	7859	778	8991
5.	छीपाबड़ौद	2045	1254	3696	2359
6.	दीगोद	4358	3287	6680	4474
7.	हिण्डोली	3874	22357	7589	15256
8.	इन्द्रगढ़	4474	8745	6054	4904
9.	के. पाटन	6079	7924	8030	4466
10.	खानपुर	4044	2545	3874	4944
11.	लाडपुरा	9375	4627	12221	6897
12.	मांगरोल	1155	2247	2889	3489
13.	नैनवा	5474	3698	6290	4888
14.	पीपल्दा	1758	4147	3356	6344
15.	सांगोद	1254	3578	2457	2798

स्रोत : जिला सांख्यिकीय रूपरेखा कोटा, बून्दी, बारां व झालावाड़—1992, 2016



## ऊसर तथा कृषि अयोग्य भूमि :

हाड़ौती प्रदेश में ऊसर भूमि का विवरण देखे तो प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ज्ञात होता है कि इस वर्ष 1991 प्रदेश में ऊसर भूमि के सर्वाधिक क्षेत्रफल वाली तहसील हिण्डौली है। इस वर्ष इस तहसील में ऊसर भूमि के अंतर्गत कुल क्षेत्रफल 22357 हेक्टेयर पाया गया है। जो इस वर्ष प्रदेश की समस्त तहसीलों में सर्वाधिक था, जबकि वर्ष 2015 में प्रदेश में सर्वाधिक ऊसर भूमि के क्षेत्रफल को देखें तो ज्ञात होता है कि इस वर्ष भी ऊसर भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल हिण्डौली तहसील में ही पाया गया है जो की 15256 हेक्टेयर है जबकि सबसे कम ऊसर भूमि का क्षेत्रफल वर्ष 1991 में छीपाबड़ौद तहसील में पाया गया है जो की 1758 हेक्टेयर है तथा प्रदेश में वर्ष 2015 में ऊसर भूमि का सबसे कम क्षेत्रफल बारां तहसील में पाया गया है जो की 2636 हेक्टेयर है।

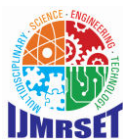
## जोत रहित भूमि :

निम्न तालिका में हाड़ौती प्रदेश की समस्त तहसीलो में जोत रहित भूमि के अंतर्गत क्षेत्रफल को दर्शाया गया है जोत रहित भूमि के अन्तर्गत भूमि की तीन श्रेणियों को सम्मिलित किया जाता है, जिनका वर्गीकरण निम्न प्रकार है।

## स्थायी चारागाह तथा अन्य गौचर भूमि :

हाड़ौती प्रदेश में स्थायी चारागाह एवं अन्य प्रकार की गौचर भूमि का विवरण देखें तो प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ज्ञात होता है की प्रदेश में वर्ष 1991 से वर्ष 2015 के मध्य इसमें औसत वृद्धि दृष्टिगत होती है। वर्ष 1991 में हाड़ौती प्रदेश में स्थायी चारागाह एवं अन्य प्रकार की गौचर भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल 5495 पाया गया था जो नैनवा तहसील में पाया गया एवं स्थायी चारागाह तथा अन्य प्रकार की गौचर भूमि का वर्ष 2015 में भी सर्वाधिक क्षेत्रफल इसी तहसील में पाया गया है जो की 5957 हेक्टेयर है। इसी प्रकार स्थायी चारागाह एवं अन्य प्रकार की गौचर भूमि का न्यूनतम क्षेत्रफल वर्ष 1991 में पीपल्दा तहसील में पाया गया है जबकि वर्ष 2015 में भी





स्थायी चारागाह एवं अन्य प्रकार की गौचर भूमि का न्यूनतम क्षेत्रफल इसी तहसील में पाया गया है। वर्ष 1991 में यह क्षेत्रफल 101 था जबकि वर्ष 2015 में यह बढ़कर 706 हो गया।

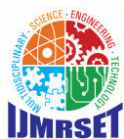
तालिका संख्या 02 : हाड़ौती प्रदेश में भूमि उपयोग—1991—2015  
(जोत रहित भूमि) (हेक्टेयर)

क्र.सं.	तहसील का नाम	1991			2015		
		स्थाई चारागाह तथा अन्य गोचर भूमि	वृक्षों के झुंड तथा बाग	बंजर (कृषि योग्य भूमि)	स्थाई चारागाह तथा अन्य गोचर भूमि	वृक्षों के झुंड तथा बाग	बंजर (कृषि योग्य भूमि)
1.	अटरू	4021	12	1014	5316	17	1574
2.	अंता	1010	55	1011	1639	73	2243
3.	बारां	2265	31	111	3889	47	682
4.	बून्दी	4878	22	1014	5128	36	1597
5.	छीपाबड़ौद	4311	0	20	5701	1	140
6.	दीगोद	1222	12	2478	2555	20	3985
7.	हिण्डोली	5498	60	6858	5423	41	8887
8.	इन्द्रगढ़	3185	55	1123	2519	65	2462
9.	के. पाटन	188	10	555	2187	23	768
10.	खानपुर	2020	1	2489	3885	3	3356
11.	लाडपुरा	1788	198	5514	2492	290	6898
12.	मांगरोल	2144	17	5489	1492	23	2085
13.	नैनवा	5495	5	5327	5957	7	7193
14.	पीपल्दा	101	7	5498	706	8	6926
15.	सांगोद	2488	120	624	2453	28	977

स्रोत : जिला सांख्यिकीय रूपरेखा कोटा, बूंदी, बारां व झालावाड़—1992, 2016

### वृक्षों के झुंड तथा बाग :

हाड़ौती प्रदेश में वृक्षों के झुंडो तथा बाग के अंतर्गत भूमि के क्षेत्रफल का विवरण देखें तो प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ज्ञात होता है की प्रदेश में वृक्षों के झुंडो तथा बाग के अंतर्गत भूमि के



क्षेत्रफल में कोई विशेष वृद्धि दृष्टिगत नहीं होती है। वर्ष 1991 में हाड़ौती प्रदेश में वृक्षों के झुंडो तथा बाग़ के अंतर्गत भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल 198 हेक्टेयर पाया गया था जो की प्रदेश की लाडपुरा तहसील में था तथा वर्ष 2015 के आंकड़ों के अनुसार भी प्रदेश में वृक्षों के झुंडो तथा बाग़ के अंतर्गत भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल इसी तहसील में पाया गया है। वर्ष 1991 की तुलना में वर्ष 2015 में इस तहसील में वृक्षों के झुंडो तथा बाग़ के अंतर्गत भूमि के क्षेत्रफल में वृद्धि देखने को मिलती है। इसी प्रकार हाड़ौती प्रदेश में वृक्षों के झुंडो तथा बाग़ के अंतर्गत सबसे कम क्षेत्रफल वाली तहसील को देखें तो ज्ञात होता है कि प्रदेश की छिपाबड़ौद तहसील में इस प्रकार की भूमि का क्षेत्रफल सबसे कम पाया गया है। वर्ष 1991 में जहाँ इस तहसील में वृक्षों के झुंडो तथा बाग़ के अंतर्गत भूमि का क्षेत्रफल शून्य पाया गया है वही वर्ष 2015 के आंकड़ों के अनुसार छिपाबड़ौद तहसील में वृक्षों के झुंडो तथा बाग़ के अंतर्गत केवल 1 हेक्टेयर भूमि पायी गयी है।

#### **बंजर भूमि :**

हाड़ौती प्रदेश में कृषि योग्य बंजर भूमि के क्षेत्रफल को देखें तो प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ज्ञात होता है कि हाड़ौती प्रदेश में कृषि योग्य बंजर भूमि के क्षेत्रफल में वर्ष 1991 से वर्ष 2015 में मध्य वृद्धि देखने को मिलती है जिसका कारण क्षेत्र में उन्नत कृषि तकनीक के उपयोग का बढ़ना है। आंकड़ों पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है की वर्ष 1991 में हाड़ौती प्रदेश में कृषि योग्य बंजर भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल प्रदेश की हिण्डौली तहसील में पाया गया है जो की 6858 हेक्टेयर है। इसी प्रकार प्रदेश में वर्ष 2015 के आंकड़ों के अनुसार कृषि योग्य बंजर भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल भी पुनः हिण्डौली तहसील में ही पाया गया है। वर्ष 1991 की तुलना में वर्ष 2015 में इस तहसील में कृषि योग्य बंजर भूमि के क्षेत्रफल में व्यापक वृद्धि दिखाई देती है।

इसी प्रकार प्रदेश में कृषि योग्य बंजर भूमि के अंतर्गत सबसे कम क्षेत्रफल वाली तहसील का आंकलन करें तो ज्ञात होता है की वर्ष 1991 में प्रदेश में इस प्रकार की भूमि का सबसे कम क्षेत्रफल छिपाबड़ौद तहसील में पाया गया है जो कि केवल 20 हेक्टेयर है, जबकि प्रदेश में वर्ष 2015 में भी कृषि योग्य बंजर भूमि का सर्वाधिक कम क्षेत्रफल इसी तहसील में ही पाया गया है।



परन्तु तुलनात्मक रूप से देखने पर ज्ञात होता है कि हाड़ौती प्रदेश में इस तहसील में कृषि योग्य बंजर भूमि के क्षेत्रफल में वर्ष 1991 की तुलना में वर्ष 2015 में वृद्धि देखने को मिलती है।

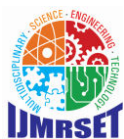
### पड़त भूमि :

पड़त भूमि के अन्तर्गत भूमि के उस प्रकार को शामिल किया जाता है जिसकी उपजाऊ शक्ति लगातार फसले बोने से घट जाती है तथा मृदा का उपजाऊपन कम अर्थात् उदासीन हो जाता है। किसान अपनी जोत की भूमि में इस प्रकार की कम उपजाऊ भूमि को कुछ समय के लिए एक वर्ष या एक फसल चक्र के लिए खाली छोड़ देता है। इस प्रकार पड़त भूमि का लम्बे समय तक कृषि उपयोग नहीं होने से बंजर भूमि में परिवर्तित हो जाती है। इस प्रकार की भूमि की जुताई व उर्वरकों द्वारा मृदा का उपजाऊपन बढ़ाकर कृषि पैदावार बढ़ाई जा सकती है तथा कुछ समय बाद उस पर पुनः कृषि की जाती है। पड़त भूमि के अन्तर्गत भूमि को दो वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है। जो कि निम्न है—

- चालू पड़त भूमि
- अन्य पड़त भूमि

### चालू पड़त भूमि :

निम्न तालिका में हाड़ौती प्रदेश में पड़त भूमि के क्षेत्रफल के विवरण को दर्शाया गया है तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है की हाड़ौती प्रदेश में पड़त भूमि के अंतर्गत क्षेत्रफल में औसत रूप से वृद्धि देखने को मिलती है। हाड़ौती प्रदेश में चालू पड़त भूमि के अंतर्गत क्षेत्रफल का विवरण देखने पर ज्ञात होता है वर्ष 1991 में प्रदेश में चालू पड़त भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल 2245 हेक्टेयर पाया गया है जो कि प्रदेश की अटारू तहसील में पाया गया है एवं इसी वर्ष प्रदेश में चालू पड़त भूमि का न्यूनतम क्षेत्रफल प्रदेश की अंता तहसील में पाया गया है। इस तहसील में चालू पड़त भूमि के अंतर्गत कुल क्षेत्रफल केवल 122 हेक्टेयर पाया गया है। जबकि हाड़ौती प्रदेश में वर्ष 2015 के आंकड़ों के अनुसार चालू पड़त भूमि का क्षेत्रफल देखें तो ज्ञात होता है कि प्रदेश में इस वर्ष चालू पड़त भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल इंद्रगढ़ तहसील में पाया गया है। इस



वर्ष इस तहसील में चालू पड़त भूमि का कुल क्षेत्रफल 2895 हेक्टेयर पाया गया है जबकि इसी वर्ष प्रदेश की मांगरोल तहसील में चालू पड़त भूमि का न्यूनतम क्षेत्रफल पाया गया है जो की 580 हेक्टेयर है। इसी क्रम में हाड़ौती प्रदेश की बूंदी तहसील में इस वर्ष चालू पड़त भूमि का कुल क्षेत्रफल 581 हेक्टेयर पाया गया है जो कि मांगरोल तहसील के पश्चात् चालू पड़त भूमि की दूसरी न्यूनतम क्षेत्रफल वाली तहसील है।

तालिका संख्या 03 : हाड़ौती प्रदेश में भूमि उपयोग-1991-2015  
(पड़त भूमि) (हेक्टेयर)

क्र.सं.	तहसील का नाम	1991		2015	
		अन्य पड़त भूमि	चालू पड़त भूमि	अन्य पड़त भूमि	चालू पड़त भूमि
1.	अटरू	1011	2245	1309	3150
2.	टंता	545	122	757	235
3.	बारां	1247	654	1954	731
4.	बून्दी	1332	247	3393	581
5.	छीपाबड़ौद	154	1988	433	1143
6.	छीगोद	1054	1214	2207	1705
7.	हिण्डोली	2787	1010	4974	1268
8.	इन्द्रगढ़	3255	2222	5044	2895
9.	के. पाटन	2256	325	3456	968
10.	खानपुर	6674	2241	5411	2725
11.	लाडपुरा	1454	1012	4107	1334
12.	मंगरोल	212	280	398	580
13.	नैनवा	1241	1387	2861	2370
14.	पीपल्दा	111	1014	1594	2397
15.	संगोद	1457	1289	1184	1298

स्रोत : जिला सांख्यिकीय रूपरेखा कोटा, बूंदी, बारां व झालावाड़-1992, 2016



## अन्य पड़त भूमि :

वर्ष 1991 से वर्ष 2015 के मध्य प्रदेश में अन्य पड़त भूमि के विवरण को देखें तो प्राप्त आंकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रदेश में वर्ष 1991 में अन्य पड़त भूमि के अंतर्गत सर्वाधिक क्षेत्रफल प्रदेश की खानपुर तहसील में है। वर्ष 1991 में इस तहसील में अन्य पड़त भूमि के अंतर्गत कुल 6674 हेक्टेयर भूमि पायी गयी है जो कि इस वर्ष समस्त तहसीलों में सर्वाधिक थी एवं प्रदेश में वर्ष 2015 के आंकड़ों के अनुसार भी अन्य पड़त भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल इसी तहसील में पाया गया है। तुलनात्मक दृष्टि से देखने पर ज्ञात होता है की खानपुर तहसील में अन्य पड़त भूमि के कुल क्षेत्रफल में वर्ष 1991 से वर्ष 2015 के मध्य तुलनात्मक रूप से कमी पायी गयी है।

इसी प्रकार प्रदेश में वर्ष 1991 में अन्य पड़त भूमि का न्यूनतम क्षेत्रफल क्षेत्र की पीपल्दा तहसील में पाया गया है। इस वर्ष पीपल्दा तहसील में अन्य पड़त भूमि के अंतर्गत भूमि का कुल क्षेत्रफल 111 हेक्टेयर पाया गया है जबकि वर्ष 2015 में हाड़ौती प्रदेश में सबसे कम अन्य पड़त भूमि के क्षेत्रफल वाली तहसील मांगरोल तहसील पायी गयी है। इस वर्ष इस तहसील में अन्य पड़त भूमि अंतर्गत भूमि का कुल क्षेत्रफल 398 हेक्टेयर पाया गया है जो की इस वर्ष प्रदेश की अन्य तहसीलों की तुलना में न्यूनतम रहा है।

## निष्कर्ष :

उपरोक्त विश्लेषण के उपरांत निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है की हाड़ौती प्रदेश में वर्ष 1991 से वर्ष 2015 के मध्य कृषि भूमि उपयोग के प्रारूप में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलते है। प्रदेश में भूमि उपयोग के स्वरूप में हुए इन परिवर्तनों के प्रमुख कारणों में क्षेत्र में बढ़ते कृषि विकास को माना जा सकता है। इन 25 वर्षों के अंतराल में हाड़ौती प्रदेश में कृषि आधुनिकीकरण एवं कृषि प्राविधिकी का स्तर निरंतर बढ़ा है जिस कारण से प्रदेश में कृषि योग्य भूमि के क्षेत्रफल में वृद्धि हुई है। इसके विपरीत प्रदेश में बंजर एवं कृषि अयोग्य भूमि के क्षेत्रफल में निरंतर कमी आयी है। कृषि विकास से हाड़ौती प्रदेश में एक और जहाँ कृषि का स्वरूप





उन्नत हुआ है वहीं दूसरी ओर बढ़ते रसायनों के उपयोग से क्षेत्र में कई कृषिगत समस्याएं भी उत्पन्न हो गयी है।

### References:

1. Bharadwaj, O.P. (1961). The arid zone of India and Pa- kistan. In, A History of Land Use in Arid Re-gions (Ed., L. Dudley Stamp), pp. 143-174. UNESCO, Paris.
2. Chouhan D.S. Studies in the utilization of Agricultural Land. Ist: Pd (1966) P-48
3. Dantwala, M.L. & Shah, C.H. (1971) Evaluation of Land Reforms (Central Report) Deptt. of Economics, University of Bombay. P-16
4. Datya, V.S. : Diddee. Jayamala & Gaikwad, G.D. (1983) Process of hand fragmentation and Effects of Land consoldation on cropping and productivity: A case study of village Nirgudi Pune Dietrict, Annals of the national Associatious of India. Vol. 111 No.1, P-12
5. District Outline of Kota, Baran, Bundi & Jhalawar, 1992, 2016
6. Francklin, W. (1805). Military Memoirs of Mr. George Thomas. John Stockdale, London (reprint), 392p.
7. Haynes, E. S. (1999). Land use, natural resources and the Rajput state, 1780-1980. In, Desert, Drought and Development (Eds., Rakseh Hooja and Rajendra Joshi), pp.53-119. Rawat Publications, Jaipur.
8. Jetske A, Bauma and Christopher A. Scott (2006) : “The possibilities for dry land crop yield improvement in India’s Semi arid regions observations from the field” International water management institute Colombo, Sri Lanka CA Case Study 3.
9. Jodha, N. S. (1972): “A Strategy for Dry Land Agriculture”, Economic and Political Weekly, Vol. 7, No. 13 (Mar. 25,), pp. A2-A18.
10. Lakshmi kant sharma S. (1197) : Sustainability of Dry Land Agriculture in India : A case study of Watershed Development Approach” page 117.
11. Ranvir Kumar (2000) “Reclamation of water logged and saline lands through Drainage” in management of water logging problem in Haryana (ed. Dhindwal, A.S. Kuhad, M.S. Vinod Kumar and Suhag L.S.) CCS Haryana Agricultural University Hisar.
12. Stamp. L.D. (1956): The land of Britan, its use and misure hongman Grean & Co. Ltd. London P-426



**INNO SPACE**  
SJIF Scientific Journal Impact Factor  
Impact Factor:  
5.928

**ISSN**

INTERNATIONAL  
STANDARD  
SERIAL  
NUMBER  
INDIA



# INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY



9710 583 466



9710 583 466



ijmrset@gmail.com

[www.ijmrset.com](http://www.ijmrset.com)